चौथा प्राणी

मृदुला गर्ग

चौथा प्राणी

मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग

जन्म : 25 अक्तूबर, 1938।

जन्मस्थान : कलकत्ता (प. बंगाल)।

शिक्षा : दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए.।

तीन-चार वर्षों तक अध्यापन करने के बाद 1970 से निरंतर लेखन-कार्य।

प्रकाशित पुस्तकें : उसके हिस्से की धूप, वंशज, चित्तकोबरा, अनित्य, मैं और मैं (उपन्यास), कितनी कैदें, टुकड़ा-टुकड़ा आदमी, डैफोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, उर्फ सैम (कहानी-संग्रह); एक और अजनबी (नाटक)।

'उसके हिस्से की धूप' का स्वयं अंग्रेजी में अनुवाद तथा 'स्काई स्क्रेपर' नाम से अंग्रेजी में ही अनूदित-संपादित विभिन्न हिंदी कहानियाँ। कई भारतीय भाषाओं के अलावा जर्मन, चेक, अंग्रेजी और रूसी भाषाओं में भी कहानियों के अनुवाद प्रकाशित।

मध्य प्रदेश साहित्य परिषद से 'उसके हिस्से की धूप' तथा आकाशवाणी द्वारा 'एक और अज़नबी' नामक कृतियों पुरस्कृत।

चौथा प्राणी

ज्योति का सवाल बिल्कुल मामूली था। इनका नाम क्या है ? पर जब उसने पूछा तो वह काफी सख्ती के साथ उसके मुँह से निकला, "और इनका नाम क्या है ?"

'और' जोड़ना एकदम जरूरी हो गया था। 'इनका' पर जोर देना भी।

कमरे में बैठे तीनों प्राणियों ने आँख उठाकर उसकी तरफ देखा। बिना शब्दों में पिरोए पूछा-किसका ?

आँख के इशारे से उसने दिखला दिया-इनका।

चौथे प्राणी के चेहरे का भाव नहीं बदला। उसने अपना नाम बतलाने की कोशिश भी नहीं की। चुपचाप चाय पीता रहा। चाय की चुस्कियां लेते हुए कोई सभ्य आदमी आवाज नहीं करता, वह भी नहीं कर रहा था। पर उसका आवाज न करना औरों से भिन्न था। उसका संबंध चाय से नहीं, उसके अपने व्यक्तित्व से था। औरों का आवाज न करना उनकी शिष्टता थी, उसकी नियति।

बाकी तीनों प्राणी भी चुप रहे। तीनों का नाम वह जानती थी। एक का बहुत पहले से, बाकी दोनों का पिछले तीन दिनों के परिचय में।

श्यामला, अचला और महामहिम बी. एन. सरकार।

नहीं, यह ज्योति की ज़्यादती है। महामहिम उनका नाम नहीं। पदवी भी नहीं। अपने को महामहिम कहलवाने की माँग भी उन्होंने कभी नहीं की। ज्यादातर लोग उन्हें बी. एन. सरकार या केवल बी. एन. कहकर पुकारते हैं। बी. एन. कहना ज्योति को खासा अटपटा लगता है इसलिए कहती है, मिस्टर सरकार। वे अलबत्ता उसे ज्योति कहकर बुलाते हैं। बरसों से। बी. एन. से ठीक क्या नाम बनता है, वह नहीं जानती। कभी पता करने की कोशिश नहीं की। ना, उनका नाम लेकर पुकारने का साहस केवल उनकी माँ कर सकी थीं।

ज्योति की जबान कहती है, मिस्टर सरकार और मन कहता है, महामहिम।

"मिस्टर सरकार," अब उसने महामहिम को सीधे संबोधित करते हुए पूछा, "मैं इन्हें क्या कहकर पुकारूँ ?"

मिस्टर सरकार चौंके नहीं। बात-बेबात चौंकने की आदत नहीं है उनकी। बस हल्के-से मुस्करा दिए, जैसे कोई सभ्य, शालीन आदमी बेतुकी उत्सुकता पर मुस्कराता है। जवाब उन्होंने फिर भी नहीं दिया।

उनकी मुस्कराहट बहुत आकर्षक है, सामने बैठे आदमी का तिरस्कार करे तब भी उनके चेहरे को आलोकित कर देती है। सुंदर वे नहीं हैं, किसी तरह नहीं हैं पर मुस्कराहट ऐसी है कि तिरस्कृत व्यक्ति भी मोहपाश में बँधा उनकी तरफ देखता रह जाता है।

हो सकता है ऐसा केवल स्त्रियों के साथ होता हो। मुस्कराहट मोह में बाँधती है क्योंकि हर स्त्री जानती है, आज तक कोई स्त्री उन्हें बाँधकर रख नहीं सकी। उनकी मुस्कराहट चुनौती है और विजय-पताका भी। स्त्री केवल अपनी नहीं, संपूर्ण स्त्री जाति की हार उसमें देखकर बौखला उठती है।

महामहिम की बैठक में उस वक्त एक चौथे प्राणी को छोड़कर तीनों स्त्रियाँ ही थीं। चौथे प्राणी की बेटी श्यामला नाखूनों पर पालिश लगा रही थी। पत्नी अचला रैक पर लगी किताबों की धूल पोंछ रही थी। अचला महामहिम की बहिन भी है।

दोनों स्त्रियों ने बरबस अपना काम रोककर मिस्टर सरकार को देखा। देखती रहीं। मिस्टर सरकार मुस्कराते रहे। चौथा प्राणी बेखबर चाय पीता रहा। यह संभव नहीं था कि उनमें से कोई उसका नाम नहीं जानता था। आखिर वे उसके नजदीकी रिश्तेदार थे।

अजनबी केवल ज्योति थी। मिस्टर सरकार को वह कई बरस से जानती थी, पर इन तीनों से परसों ही मिलना हुआ। अचानक बंबई चले आने पर आदतन उनके घर चली आई तो देखा उनकी बहिन सपरिवार मौजूद है। श्यामला और अचला से वह दो दिनों में ही घुलमिल गई पर यह घर का चौथा प्राणी...!

आज जाने क्यों अचानक उसका नाम पूछ बैठी। जानने को विशेष उत्सुक नहीं थी पर जवाब न मिलने पर वह तिलमिला उठी थी। प्रश्न पूछा तो उत्तर उसे मिलना ही चाहिए। एक सवाल को दो बार दुहराना नाकाबिले-बर्दाश्त है उसके लिए। इतना अहंकार न होता तो क्या महामहिम सरकार अब तक मिस्टर सरकार ही बने रहते।

बी. एन. के बी से क्या बनता है ? बीरेन, बंकिम, बेणु...बंशी...याद नही आ रहा, माँ उन्हें क्या कहकर पुकारा करती थीं, बरसों हो गए उन्हें गुजरे। सहसा उनमें से एक नाम उसके अवचेतन में बज उठा। बीरेन। माँ